Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अहिल्याबाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. कुन्ती वराठे*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय कला महाविद्यालय, बम्हनी बंजर, जिला-मण्डला (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – मालवा साम्राज्य की महारानी अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई 1925 धनगर गायरी समाज में चौड़ी नामक गांव में हुआ था। जो कि अब महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के जामखेड में पड़ता है। उनके पिता मानकोजी शिंदे एक किसान परिवार से थे। अहिल्या बाई का विवाह इंदौर साम्राज्य के महाराजा मल्हार राव होल्कर के पुत्र खण्डेराव से हुआ था। उनका एक पुत्र मालेराव एवं पुत्री मुक्ताबाई थी। अहिल्या बाई लगभग उन्तीस वर्ष की आयु में विधवा हो गयी थी और उन्होंने सती होने का प्रण लिया कि जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं है। तब उनके ससुर मल्हार राव ने समझाने का प्रयास किया और वे कार्य में सफल हुए अहिल्या ने सती होने का विचार को त्यागकर प्रजा की सेवा करने का उत्तरदायित संभाला। 'बहुजन का हिताय बहुजन सुखाय' के मूल मंत्र को अपने जीवन मैं अपनाया उन्होंने राजसी ठाटबाट का त्याग कर दिया और अपना जीवन दु:खी पीड़ित लोगों की सेवा को सर्वश्रेष्ठ माना। 30 साल के शासनकाल के दौरान मराठा प्रांत की राजमाता अहिल्याबाई होल्कर ने एक छोटे से गाँव इंदौर को समृद्धशाली शहर बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अहिल्या बाई अपने ससुर मल्हार राव के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। क्योंकि उनके ससुर चाहते थे कि उनकी पुत्रवधु राजकाज चलाने में निपुण हो सके अत: उन्हें राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एंव भौगोलिक स्थिति से परिचित कराना चाहते थे। मल्हारराव एक कुशल शासक थे अत: वे युद्धों में व्यस्त रहने के बावजूद अपने पुत्रवधु का मार्गदर्शन करते रहते थे। मल्हार के राव के भाईयों मैं तुकोजीराव होल्कर एक विश्वासपात्र थे। मल्हार राव ने उन्हें अपने साथ रखकर राजकाज के लिये तैयार कर लिया था । अहिल्याबाई इन्हें अपना सेनापति बनाया था और चौथ वसूलने का काम उन्हें सौंपा। तुकोजी उन्हें अपने माता की भांति मानते थे और राज्य की हर कार्य सच्चाई से करते थे। अहिल्याबाई उन्हें अपने पुत्र जैसा मानती थीं। उनका उल्लेख कहीं-कही-खण्डोंजी सुत तुकोजी होल्कर के रुप में भी आता है।

मराठा साम्राज्य के शासक मल्हार राव 1766 ई. में निधन हो गया। इससे संपूर्ण मराठा साम्राज्य को गहरा आघात लगा। क्योंकि वे साम्राज्य के एक आधार स्तम्भ थे। पराक्रमी शक्तिशाली थे। अपने पिता समान ससुर का जाना अहिल्या बाई के लिये अत्यंत ही असहनीय थे। इसके पश्चात उनका पुत्र मालेराव मालवा के सिंहासन पर आसीन हुआ। अहिल्याबाई के जीवन में काफी संकट खड़ा हुआ। राज्य में चोर, डाकुओ का आतंक बहुत अधि था। एसे समय में रानी ने घोषणा की जो भी इन डाकुओं का सफाया करेगा वह अपनी पुत्री का विवाह उस व्यक्ति से कर देगी। यशवंत राव फणसे ने रानी की शर्त पूरी कर दिखाई और इस तरह पुत्री भुक्ताबाई का विवाह वीर योद्धा यशवंत राव से हुआ। उनका पुत्र नथ्या हुआ। जिसे अहिल्या बाई बहुत प्रेम करती थी, किन्तु बीमारी से नध्या की मृत्यु हो गयी। उसके बाद यशवंतराव फणसे का निधन हो गया। यह घटना अहिल्या बाई को पूरी तरह झकझोर दिया। मुक्ताबाई ने सती होन का निश्चय किया। इस प्रकार अहिल्याबाई पूरी तरह से टूट गयीं। पति, ससुर, नवासा, दामाद एवं पुत्री के जाने का असहनीय पीडा को सहने को मजबूर हो गयी। मानों वृक्ष से डालियां टूटकर बिखर गये है। ऐसी परिस्थितियों के बाद भी अहिल्याबाई ने हिम्मत नहीं हारी उन्होंने अपनी प्रजा लिये स्वयं को समर्पित दिया। अपने साम्राज्य की रक्षा के लिये उन्होंने जहाँ तक संभव हुला किया।

अहिल्या बाई के के होल्कर ने 1957 में होलकर राज्य की बागडोर संभाली। उनके ससुर के मार्गदर्शन का प्रभाव ऐसा पडा कि रानी में एक कुशल शासक के सभी गुण विद्यमान थे। प्रजा की हित, सुरक्षा तथा बाहय आक्रमणों एवं डाकुओं से अपने साम्राज्य की रक्षा करने का हर संभव कोशिश की। प्रजा के दिल में किये गये कार्यो के लिये उन्हें 'लोकमाता' की उपाधि भी दी गयी। अहिल्या बाई ने महिलाओं की सेना तैयार कर उन्हें प्रशिक्षित की। युद्ध कलाओं में निपुण बनाया। इस प्रकार उन्होंने महिलाओं की भी एक लेना तैयार की। रानी अहिल्याबाई ने अपने शत्रु दादा राघोबा को एक पत्र लिखा आप मेरा राज्य हडपने आये है। यह आपको शोभा नहीं देता कि आप एक नारी के साथ युद्ध करों। मैं एक स्त्री हूँ असहाय नारी हूँ यह समझकर आप आये हैं, ये बात रणभूमि में पता चलेगा युद्ध भूमि में हार गई तो मुझे कोई याद नहीं रखेगा अगर आप हार गये तो आपकी जग हंसाई होगी। मैं अपनी महिला सेना के साथ युद्ध भूमि में मुकाबला करुगी। आपका भला इसी में है कि आप जैसे आये हैं वैसे ही चुपचाप वापस चले जायें ।

दादा राघोबा ने जैसे ही यह पत्र पढ़ा तो वे बिना युद्ध लड़े ही चले गये इस प्रकार रानी ने एक शत्रु को अपना मित्र बना लिया। रानी अहिल्या बाई मे लोकहित कार्यों करना अपना उत्तरदायित्व समझती थीं उन्होंने राहगीरो, निर्धनो, विकलांगों साधु-संतो, पशु-पक्षियो सभी ख्याल राखती थी। अपने सैनिकों एवं कर्मचारियों का भी विशेष ध्यान रखती थीं। समाज के सभी वर्गो के लिये उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किये। कल्याणकरी व परोपकारी कार्यों द्वारा राष्ट्र निर्माण भी अपना योगदान दिया। देश में धार्मिक कार्यो के लिये भी सराहनीय प्रयास किया। मंदिरों का पुनर्निर्माण कराया जिन्हें आक्रमणकारियों ने नष्ट कर दिया था। उनका जीर्णोद्धार करवाया। अनेक

घाट बनवाये उसमें स्त्री पुरुष के लिये प्रथक धाटो भी निर्माण कराया। उन्होंने बंद्रीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वरम, जगन्नाथपुरी, द्वारका, पैठण महेश्वर, वृंदानव, पंढरपुर आदि स्थानों पर भी-मंदिरो का निर्माण करवाया। त्रयंबकेश्वर ज्योतिलिंग में तीर्थ यात्रा के लिये विश्रामगृह, आयोध्या, नासिक में भगवान राम के मंदिरों का निर्माण भी करवाया। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक राष्ट्रीय एकता कायम करने के लिये प्रशंसनीय प्रयास किये। उनकी धार्मिकता इतनी उदार थी धर्म व नीति के क्षेत्री में उन्होंने अपना नाम अजर-अमर कर दिया।

देवी अहिल्या बाईक सादगीपूर्ण जीवन उनका शासन और कुशल राजनीति संसार के इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है। 13 अगस्त 1795 को रानी अहिल्या बाई की दिव्य आत्मा ने शरीर त्याग दिया वे इतिहास में अजर-अमर हो गयीं।

भारत के इतिहास में ऐसे अनेक नारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनमें से एक लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व उन्हें विश्व की श्रेष्ठतम नादियों में अग्रणी बनाता है। भारतीय इतिहास में और जनमानस पर उनका विशेष प्रभाव रहा है। देवी अहिल्या में आदर्श भारतीय नारी के सभी गुण मौजूद थे। आज स्वतंत्र भारत में अहिल्याबाई होल्कर का नाम सम्मान पूर्वक लिया जाता है और उनके नाम से कल्याणकारी योजनाएँ भी संचालित है। देवी अहिल्या बाई होल्कर एक महान शासिका थीं उन्होंने अपने कल्याणकारी कार्यो, जनहित एवं सुशासन के द्वारा मध्यप्रदेश में ही नहीं वरन भारतीय इतिहास में उन महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अहिल्या देवी का योगदान आज भी प्रेरणा के स्त्रोत है जो कि अविस्मरणीय रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुप्ता डॉ. अनुरुद्ध एवं द्विवेदी डॉ.सत्यम रवि लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर: एक विस्तृत युगदृष्टा, सुरुचि प्रकाशन 2024
2. जावेलकर अरविन्द, लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर: मालवा के मराठा राज्य की रानी प्रभात प्रकाशन 2024
3. मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, अहिल्याबाई होलकर जीवन और योगदान।
4. जोशी हरि नारायण महारानी अहिल्याबाई होल्कर, अहिल्याबाई के जीवन और शासन की विस्तृत इतिहास।

****